ओंकारेश्वर सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज के वार्षिकोत्सव समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–26.03.2017, समय–अपराह्न–5:00 बजे, स्थान–बी॰एन॰एस॰डी॰ शिक्षा निकेतन, कानपुर)

ओंकारेश्वर सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज के वार्षिकोत्सव में प्रमुख रूप से उपस्थित श्री संदीप जैन जी, डॉ॰ अनूप जैन जी, डॉ॰ बी॰पी॰ राय जी, कर्नल एस॰एन॰ पांडेय जी, श्रीमती प्रतिमा दूबे जी, डॉ॰ प्रेम कुमारी मिश्रा जी, गणमान्य अतिथिगण, शिक्षक एवं विद्यार्थीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

भारत भूमि सदैव से अनगिनत प्रतिभाओं की जननी रही है। इस वसुन्धरा ने ऐसी अनेक विभूतियों को जन्म दिया है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय देकार विश्व को चमत्कृत किया। आज हमारी शिक्षा, संस्कृति व परम्पराओं का लोहा पूरा विश्व मानता है। यह सब सतत् चिन्तन, परिश्रम व नवीन अनुसंधानों का प्रतिफल है।

प्यारे बच्चों, हर एक व्यक्ति जो महान होता है, आवश्यक नहीं कि वह राजमार्ग पर ही चलकर आया हो। वस्तुतः जिसने संकटों से लड़ना सीखा, प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना मार्ग निकाला, वही सच्चा बहादुर होता है। समस्याओं को देखकर, हाथ पर हाथ रखकर बैठना हमारी प्रकृति नहीं है, हम अपना मार्ग स्वयं बनाते हैं और लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

प्यारे विद्यार्थियों! आप देश के भावी कर्णधार हैं। भविष्य के निर्माण में आप सबकी भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जिस देश में हम जन्मे, पले–बढ़े उसके प्रति भी हमारा कर्त्तव्य बनता है। यदि हम अपने राष्ट्र के काम में न आये, तो हमारा जीवन निरर्थक है। राष्ट्र के प्रति हमारी श्रद्धा तभी सिद्ध होगी, जब हम मन–वचन–कर्म से देश की प्रगति के संवाहक बनेंगे। हम अपने समाज के जितने भी महापुरूषों को देखते हैं या उनका जीवन–चरित्र पढ़ते हैं, उनमें एक सामान्य गुण यह भी रहा है कि उन्होंने अपने जीवन का एक लक्ष्य अवश्य निर्धारित किया तथा

पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करके सफलता अर्जित की। महत्वाकांक्षा मनुष्य का नैसर्गिक गुण है। अतः हमें भी सपने देखने चाहिए। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम साहब भी कहा करते थे कि ''हर इंसान को सपना जरूर देखना चाहिए।'' वे यह भी जोड़ते थे कि –''सपना वह नहीं है, जो हम सोये हुए देखते हैं, बल्कि सच्चा सपना तो वह है जो हमें सोने ही नहीं दे।'' सच्चे सपने को साकार करने के लिए हमें सचमुच अपनी सुध–बुध खो देनी पड़ती है। जिस समाज व राष्ट्र में हम रहते हैं, उसका हित–चिन्तन हमारे स्वप्नों का आधार होना चाहिए। हमारी संस्कृति हमें ऐसे ही संस्कारों से पोषित करती है। हमारे संस्कार त्याग, धैर्य, सहानुभूति, संवेदना जैसे मौलिक गुणों को हममे विकसित करते हैं, जिनसे हम सुन्दर समाज व सुदृढ़ राष्ट्र की कल्पना को साकार रूप देकर दूसरों के लिए उदाहरण बनते हैं।

आज हमें अपने राष्ट्र को अपने अथक परिश्रम एवं प्रतिभा से आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त और सुदृढ़ बनाना है। इसके लए आवश्यक है कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित की जाये, जिसका आधार भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य हों और जिसमें तकनीकी विकास, कौशल विकास, प्रोद्योगिकी विकास आदि भी समाहित हों। वस्तुतः शिक्षाविदों, प्रधानाचार्यों व शिक्षकों का यह गुरूतर दायित्व है कि वे आज के परिप्रेक्ष्य में शिक्षार्थियों की अन्तर्निहित प्रतिभा को पहचानें व उन्हें सही मार्ग–दर्शन देकर छात्रों का व्यक्तित्व–निर्माण करें।

भारत सरकार द्वारा 'अटल टिंकरिंग लैब' की स्थापना हेतु ओंकारेश्वर विद्यालय का चयन किया गया है, इससे छात्र–छात्राओं को अपने नवाचार व कौशल–विकास हेतु नई दिशा मिलेगी।

ओंकारेश्वर सरस्वती विद्या निकेतन के वार्षिकोत्सव पावन अवसर पर मैं समस्त कॉलेज–परिवार को अपनी बधाइयाँ व शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***